



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13

अंक : 2

अक्टूबर, 2025

मूल्य : ₹2.00



मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

समेकित कृषि एवं पशुपालन से ही आत्मनिर्भरता संभव

वर्तमान समय में जब पारंपरिक कृषि प्रणाली बढ़ते खर्च, घटती उत्पादकता, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब समेकित कृषि एवं पशुपालन एक वैकल्पिक नहीं बल्कि अनिवार्य समाधान के रूप में उभर रही है। यह प्रणाली न केवल एक कृषि तकनीक है, बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो किसानों को आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से सशक्त बनाती है। समेकित कृषि प्रणाली का आशय ऐसी कृषि पद्धति जिसमें कृषि (फसल उत्पादन), पशुपालन, मत्स्य पालन, बागवानी, वानिकी, मधुमक्खी पालन और अन्य सहयोगी गतिविधियों को एक-दूसरे के पूरक के रूप में अपनाया जाता है। यह एक बहु-आयामी प्रणाली है जो संसाधनों के कुशल प्रबंधन, अवशेषों के पुनः उपयोग और विविध आय के स्रोतों के माध्यम से टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देती है। प्रकृति में सभी घटक एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। समेकित कृषि इस सह-संबंध को व्यवहार में लाती है। जैसे पशुओं से प्राप्त गोबर और मूत्र का उपयोग जैविक खाद और कीट नियंत्रक के रूप में किया जाता है वहीं फसलों के अपशिष्ट (पराली, भूसी, चारा आदि) पशुओं के आहार में काम आते हैं। यह परिपत्र अर्थव्यवस्था की अवधारणा को ग्रामीण स्तर पर साकार करता है। किसानों की आमदनी का अस्थिर होना एक प्रमुख समस्या है जो अधिकतर एक ही फसल या उत्पादन पर निर्भरता के कारण उत्पन्न होती है। समेकित कृषि प्रणाली किसानों को विविध आय स्रोत प्रदान करती है जैसे दुग्ध व्यवसाय, अंडा उत्पादन, मछली पालन, फल-सब्जी उत्पादन आदि। इससे मौसमी असफलता या जलवायु संकट की स्थिति में भी किसान को पूर्ण आय हानि नहीं होती। यह आर्थिक लचीलापन बढ़ाने का प्रभावी उपाय है। समेकित कृषि पारंपरिक रसायन आधारित खेती की तुलना में जैविक और पर्यावरण हितैषी होती है। इसमें सिंथेटिक रसायनों का प्रयोग न्यूनतम होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता, जल की गुणवत्ता और जैव विविधता बनी रहती है। साथ ही यह प्रणाली कार्बन फुटप्रिंट को कम कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को घटाने में सहायक है। यह 'सरटेनेबल डेवलपमेंट गोल्स' की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान है। समेकित कृषि ग्रामीण युवाओं को रोजगार के विविध अवसर प्रदान करती है, जिससे शहरी पलायन में कमी आती है। महिलाओं की भागीदारी भी इस प्रणाली में बढ़ती है, विशेषतः दुग्ध उत्पादन, मुर्गी पालन, बागवानी आदि क्षेत्रों में। यह ग्रामीण समाज में समानता, भागीदारी और आर्थिक न्याय की भावना को सुदृढ़ करता है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या, खाद्य सुरक्षा और किसानों की आय को दोगुना करने जैसे लक्ष्यों को देखते हुए समेकित कृषि एवं पशुपालन न केवल उपयोगी, बल्कि आवश्यक रणनीति बन चुकी है। यह "आत्मनिर्भर भारत" और "हरित भारत" के निर्माण की नींव बन सकती है जहाँ किसान आत्मनिर्भर हो, प्रकृति संरक्षित हो और समाज समृद्ध हो। समेकित कृषि एवं पशुपालन एक ऐसी प्रणाली है जो केवल उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैचारिक परिवर्तन है जिसमें किसान को एक उद्यमी के रूप में देखा जाता है जो संसाधनों का वैज्ञानिक, सतत और समावेशी उपयोग करता है। यह प्रणाली वर्तमान कृषि संकटों का समाधान है और भविष्य के लिए एक सुरक्षित, समृद्ध और संतुलित मार्ग भी है।



डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

डॉ. सुमंत व्यास ने वेटरनरी विश्वविद्यालय कुलगुरु पद का कार्यभार ग्रहण किया

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु पद का कार्यभार डॉ. सुमंत व्यास ने 1 अक्टूबर बुधवार को ग्रहण किया। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ बागडे ने राज्य सरकार की सलाह पर आदेश जारी कर कार्यभार संभालने की तिथि से तीन वर्ष या सत्तर वर्ष की आयु प्राप्त करने तक, इनमें से जो भी पहले हो के लिए डॉ. सुमंत व्यास को वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु पद पर नियुक्त किया है। निवर्तमान कुलगुरु प्रो. आचार्य मनोज दीक्षित ने कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास को इस अवसर पर बधाई दी। गौरतलब है कि इससे पूर्व डॉ. सुमंत व्यास जोधपुर स्थित केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.) में निदेशक (कार्यवाहक) के पद पर कार्यरत रहे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा, डीन-डॉयरेक्टर, अधिकारियों, शिक्षकों एवं प्रशासनिक कार्यालय के कर्मचारियों ने नव कुलगुरु को शुभकामनाएं एवं बधाई दी।



गौ महाकुम्भ-2025 में राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा विद्याधर नगर स्टेडियम, जयपुर में दिनांक 4-7 सितम्बर, 2025 तक आयोजित चार दिवसीय गौ महाकुम्भ-2025 में विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि "देशी गौवंश-समृद्ध राजस्थान" की थीम पर आयोजित राजुवास स्टॉल पर गौपालकों व आमजन का रुझान रहा। अखिल भारतीय गौ सेवा के राष्ट्रीय प्रमुख श्री शंकरलाल, डॉ. लालसिंह, पूर्व निदेशक गोपालन विभाग, राज. जयपुर सहित कई गणमान्य लोगों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश की छः देशी गौवंश के संवर्द्धन, उन्नयन व वैज्ञानिक तरीके से पालन की जानकारी गौ प्रेमी, किसानों-पशुपालकों एवं आगुन्तकों को प्रदान की गई। विश्वविद्यालय द्वारा गौ संवर्द्धन कार्य एवं वैज्ञानिक तौर-तरीकों को मॉडल्स के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में सहायक निदेशक प्रसार डॉ. संजय सिंह ने किसानों व पशुपालकों को जानकारी प्रदान की।



वेटरनरी विश्वविद्यालय के नये कुलसचिव पंकज शर्मा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलसचिव पद का कार्यभार पंकज शर्मा, आर.ए.एस. अधिकारी ने 23 सितम्बर को ग्रहण कर लिया। संयुक्त शासन सचिव, कार्मिक विभाग राजस्थान सरकार, जयपुर के आदेशानुसार पंकज शर्मा ने यह पद ग्रहण किया है।





जिला स्तरीय मेगा विधिक सेवा शिविर में राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बीकानेर द्वारा आमजन को माननीय राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की जनकल्याणकारी योजनाओं व जिले के अन्य समस्त विभागों की योजनाओं से लाभान्वित तथा आमजन को जागरूक करने हेतु दिनांक 20 सितम्बर, 2025 को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित जिला स्तरीय मेगा विधिक सेवा शिविर में विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश माननीय बी.आर. गवई, केन्द्रीय कानून मंत्री माननीय अर्जुन राम मेघवाल, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधिपति माननीय विजय बिश्नोई, राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा, पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़, इन्द्रजीत सिंह, रवि चिरानिया, जिला एवं सत्र न्यायाधीश बीकानेर श्री अतुल कुमार सक्सेना, जिला कलेक्टर नमृता वृष्णि सहित न्यायिक अधिकारी, जिला प्रशासनिक अधिकारियों ने प्रदर्शनी स्थल का अवलोकन किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूडिया बताया गौ संवर्द्धन कार्य एवं वैज्ञानिक तौर-तरीकों को मॉडल्स एवं चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया तथा विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश की छः देशी गौवंश के संवर्द्धन, उन्नयन व वैज्ञानिक तरीके से पालन की जानकारी गणमान्य लोगों के साथ किसानों-पशुपालकों एवं आगुन्तकों को प्रदान की गई। प्रदर्शनी में सहायक निदेशक प्रसार डॉ. संजय सिंह ने किसानों व पशुपालकों को जानकारी प्रदान की।



क्षेत्रीय परिस्थितियों के अंतर्गत पशु चिकित्सकों का सामान्य शल्य चिकित्सा एवं एनेस्थीसिया पर प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग द्वारा उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिलों के टी.एस.पी. क्षेत्र के 20 पशु चिकित्सकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 8 सितम्बर से प्रारंभ हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि अधिष्ठाता वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच ने कहा कि यह प्रशिक्षण टी.एस.पी. क्षेत्रों में कार्यरत पशुचिकित्सकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगा क्योंकि इस प्रशिक्षण के माध्यम से सर्जरी की विभिन्न तकनीकों को सीखने का मौका मिलेगा जो की फील्ड की परिस्थितियों में बहुत उपयोगी है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूडिया ने फील्ड पशुचिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से विभिन्न शल्य चिकित्सा एवं एनेस्थीसिया की बारिकीयों को जानने एवं सिखने का मौका मिलेगा जो कि कौशल विकास में सहायक होगी। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि यह प्रशिक्षण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) के अधीन नेटवर्क प्रोजेक्ट ए.आई.एन.पी. एण्ड डी.आई.एम.एस.सी.ए. के अंतर्गत आयोजित किया गया है। इस प्रशिक्षण के आयोजन में डॉ. साकार पालेचा, डॉ. अनिल बिश्नोई और डॉ. महेंद्र तंवर का सहयोग रहा।



वेटेनरी विश्वविद्यालय में मनाया राष्ट्रीय अभियंता दिवस

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी सेन्टर द्वारा 17 सितम्बर को राष्ट्रीय अभियंता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. अखिल रंजन गर्ग एवं वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित रहे। कुलगुरु डॉ. गर्ग ने अपने उद्बोधन में कहा कि पशु चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी एक दूसरे के अभिन्न घटक हैं एवं जीव की प्रत्येक संरचना में इंजीनियरिंग उपस्थित है। अभियांत्रिकी का पशु विज्ञान के साथ रचनात्मक समायोजन वर्तमान एवं भविष्य के लिए बहुत आवश्यक है। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने बताया की वेदों में निहित तथ्य एवं पुरातत्त्व ज्ञान वर्तमान इंजीनियरिंग के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण है। भारत में उपस्थित शिल्पियां एवं रचनाये इसकी उन्नत अभियांत्रिकी को प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने कहा की अभियांत्रिकी की नवीन तकनीकों का उपयोग कृषि एवं पशुपालन के विभिन्न आयामों में होना चाहिए ताकि पशुपालकों एवं किसानों का कम लागत में उन्नत तकनीक मुहैया हो सके एवं उत्पादन बढ़ सके। स्वागत उद्बोधन में निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने किया एवं केन्द्र के सहायक आचार्य डॉ. दिवाकर चौधरी ने इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी सेन्टर की गतिविधियां को पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्त में अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।





दुग्ध व दुग्ध उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण

डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर में सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत "दुग्ध तथा दुग्ध उत्पादों का मूल्य संवर्धन" विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 25 सितम्बर को किया गया। इस कार्यक्रम में गोद लिए गांव कतरियासर से 25 प्रतिभागी छात्राओं ने भाग लेकर दुग्ध उत्पादों की नई तकनीकों और उनके मूल्य संवर्धन की बारीकियों को सीखा। कुलसचिव पंकज शर्मा, अधिष्ठाता प्रो. राहुल सिंह पाल एवं डॉ. एन.एस. राठौड़, उप कुलसचिव राजुवास ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. सुनिल कुमार तथा डॉ. सोनिया मोर की देख रेख में किया गया।



गांव बम्बलू के पशुपालकों का कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के तहत कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 27 सितम्बर को किया गया। कार्यक्रम में गोद लिए गांव बम्बलू के पशुपालकों ने कौशल विकास प्रशिक्षण में भाग लेकर मुर्गी पालन, गौपालन एवं दुग्ध और दुग्ध से बने उत्पादों के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन तथा नवीन तकनीकों को देखा और समझा। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान पशुपालकों को आधुनिक पशुपालन तकनीकी द्वारा उन्नत पशुपालन एवं कुक्कुट पालन करने तथा दुग्ध प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से होने वाले लाभ की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. प्रियंका कडेली द्वारा किया गया।



विश्व रेबीज दिवस के अवसर पर रेबीज रोधी टीकाकरण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 28 सितम्बर को कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर एवं इंडियन इन्फुनोलॉजिकल लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व रेबीज दिवस' के अवसर पर श्वानों के लिए एक दिवसीय निःशुल्क रेबीज वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन वेटेनरी महाविद्यालय के क्लिनिक्स परिसर में किया गया। प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक क्लिनिक ने बताया कि शिविर के दौरान कुल 40 श्वानों व बिल्लियों को निःशुल्क टीका लगाया गया एवं श्वान पालकों में रेबीज रोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न की गई। इस आयोजन में डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. जे.पी. छछावा, डॉ. संध्या एवं पी.जी. व पी.एच.डी. विद्यार्थियों का सहयोग रहा।



पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 23, 24, 25, 27 एवं 29 सितम्बर को गांव हालासर, सरायन, देपालसर, बैन एवं टुंडा खेड़ी में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 26 को गांव सुली पगाड़ा एवं मथाफाला पगाड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 31 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 8, 10-11, 17-18 एवं 24-25 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 5 सितम्बर को गांव ढाणी भोपालपुरा में

एक एवं दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चितौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 10 एवं 17 सितम्बर को गांव सेमलिया एवं सेगवा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 64 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 3, 6, 9 एवं 10 सितम्बर को गांव गन्धेली, गुडिया, गोरखाना एवं 30 एनटीआर गांवों में तथा 27-30 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 140 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





आवारा श्वान और रेबीज नियंत्रण पशु कल्याण बनाम जनस्वास्थ्य

भारत की गलियों और मौहल्लों में आवारा श्वान का पाया जाना आम है। कहीं ये बच्चों के खेल के साथी होते हैं तो कहीं राहगीरों के लिए भय का कारण लेकिन इनके साथ सबसे बड़ा खतरा है रेबीज, एक ऐसी बीमारी, जो एक बार लक्षण दिखाने पर लगभग 100 प्रतिशत मृत्यु का कारण बनती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार हर साल पुरी दुनिया में लगभग 60,000 लोग रेबीज से मरते हैं, जिनमें से सबसे बड़ा हिस्सा भारत से आता है।

जनस्वास्थ्य की चुनौती

भारत में आवारा श्वानों की संख्या करोड़ों में आंकी जाती है। शहरी क्षेत्रों में कचरे के ढेर और खुले खाद्य पदार्थ इनकी संख्या बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। वहीं ग्रामीण इलाकों में पशुधन और घरों के आसपास बचा हुआ खाना इनका भोजन होता है। रेबीज के मामले में सबसे ज्यादा खतरे में होते हैं बच्चे, क्योंकि वे अक्सर श्वानों से खेलने या छेड़ने में काट लिए जाते हैं। कई बार लोग अंधविश्वास या जानकारी की कमी के कारण श्वान के काटने के बाद घाव को साबुन से धोते नहीं और चिकित्सक के पास जाने में देर कर देते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा और बढ़ जाता है।

पशु कल्याण का पहलू :

दूसरी तरफ अब आवारा श्वानों की बढ़ती संख्या से परेशानी होती है तो कई बार समाज का गुस्सा इन बेजुबान पशुओं पर निकलता है। श्वानों से सुरक्षा का समाधान इन्हें रास्तों से खत्म करना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और मानवीय प्रबंधन है।

संतुलित समाधान की राह :

- **पशु जन्म नियंत्रण** : बंध्याकरण से श्वानों को धीरे-धीरे नियंत्रित किया जा सकता है।
- **एण्टी रेबीज टीकाकरण अभियान** : समय-समय पर टीकाकरण करने से रेबीज पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
- **कचरा प्रबंधन** : शहरों और गांवों में कचरे का ढंग से निपटारा करने से श्वानों को आसानी से भोजन नहीं मिलेगा और उनकी अनियंत्रित बढ़ोतरी पर रोक लगेगी।
- **जन जागरूकता** : श्वानों के काटने पर तुरंत साबुन, पानी से घाव धोना चाहिए और नजदीकी अस्पताल जाकर एण्टी रेबीज का टीका लगवाना चाहिए।

पशु आश्रय गृह : बीमार और आक्रमक श्वानों को सुरक्षित आश्रयों में रखकर उनका इलाज किया जा सकता है।



डॉ. वैशाली

सहायक आचार्य, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

डेयरी पशुओं में मद-समकालीनता (हीट सीनक्रोनाइजेशन)

भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है, विश्व के कुल दुग्ध उत्पादन का 24.6 प्रतिशत हिस्सा भारत द्वारा उत्पादित होता है। भारत की कुल जीडीपी का 5 प्रतिशत हिस्सा दूध उत्पादन से आता है।

- भारत में सामान्यतः लोग दूध उत्पादन के लिए गाय, भैंस, बकरी इत्यादि पालते हैं।
- दूध उत्पादन के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पशु समय पर मद/हीट में आये और गर्भधारण करें।
- पशुओं में एक विशेष प्रकार का चक्र मद चक्र होता है जिसमें पशु के अण्डाशय में विशेष प्रकार के परिवर्तन होते हैं, अण्डे का निर्माण परिपक्व होता है, इस समय पशु विशेष लक्षण दिखाता है। जिसे पशु का गर्मी में/हीट में आना कहते हैं।
- पशुओं के प्रजनन प्रबंधन के लिए मद समकालीनता एक महत्वपूर्ण तकनीक है। इस प्रक्रिया में पशुओं को कुछ विशेष प्रकार के प्रबंधन करके पूर्व निर्धारित समय में एक साथ बहुत सारे पशुओं का हीट में लाया जाता है।

मद समकालीनता के फायदे –

- मद समकालीनता के उपयोग से हम डेयरी के वार्षिक दुग्ध उत्पादन को नियमित रख सकते हैं।
- इससे औसत बछड़ों/बछियों का उत्पादन अधिक होता है।
- अधिक पशुओं के साथ में हीट में आने से उनके रख-रखाव में लगने वाला समय कम हो जाता है तथा कृत्रिम गर्भाधान में लगने वाली लागत भी कम हो जाती है।
- अनियमित प्रजनन चक्र वाली मादाओं के लिए यह तकनीक फायदेमंद है। इससे उनके प्रजनन अंगों को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है।
- पशु के निरन्तर दो बार ब्याने वाले समय को हम इस तकनीक द्वारा कम कर सकते हैं।

मद समकालीनता के कई तरीके हैं जिसे दो भागों में बांट सकते हैं—

1. हार्मोन के उपयोग के बिना।
2. हार्मोन का उपयोग करके।

कई बार पशु शरीर में पोषक तत्वों की कमी के कारण हीट में नहीं आते हैं इस कमी को दूर करने के लिए पशु को नियमित रूप से संतुलित आहार देना चाहिए। पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए पशुओं को बाजार में उपलब्ध मिनरल मिक्सचर दे सकते हैं।

पशु को बछड़े से अलग करना : –

पशु को अपने बछड़े से अलग करने से पशु के शरीर में विशेष हार्मोनों का स्त्राव होता है जिस कारण पशु हीट में आ जाता है।

प्रकाश की उपलब्धता : – कुछ पशुओं का मद चक्र प्रकाश के प्रति संवेदनशील होता है यदि पशु जैसे— भैंस, बकरी, भेड़ आदि को अंधेरे में अधिक समय में रखें व घोड़ी को ज्यादा प्रकाश में रखें तो वो हीट में जल्दी आते हैं।

नर पशु को साथ में रखना : – मादा पशुओं को नर के साथ रखने पर मादा पशु जल्दी हीट में आती है। यह आम तौर पर बकरियों में देखा जा सकता है। इनके अलावा भी अनेक तरीके हैं जिसमें विशेष प्रकार की दवाइयों और हार्मोनों का उपयोग किया जाता है इनके लिए पशुचिकित्सकों से सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ. नेहा चौधरी एवं प्रमोद कुमार

वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर



पशु स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता

दूध एक प्रमुख पोषण स्रोत और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। दूध की मात्रा और गुणवत्ता कई कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है पशु का स्वास्थ्य। स्वस्थ पशु अधिक मात्रा में और पोषण तत्वों से समृद्ध दूध देते हैं, जबकि बीमार, कमजोर या तनावग्रस्त पशु का दूध उत्पादन घटता है और उसकी पोषण गुणवत्ता प्रभावित होती है। पशु स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता के बीच गहरा संबंध है। रोग, संक्रमण और थर्मल तनाव जैसे कारक सीधे दूध में वसा, प्रोटीन और लैक्टोज की मात्रा को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, मैस्टाइटिस जैसी दूधग्रंथियों की बीमारी दूध में संक्रमण और वसा की कमी उत्पन्न कर सकती है। इसके अलावा, पोषण की कमी, असंतुलित आहार या प्रतिरक्षा प्रणाली में कमजोरी भी दूध की गुणवत्ता को घटाती है। भारत, एक उष्णकटिबंधीय देश होने के कारण, अपने पशुधन को तापीय तनाव और चरम मौसम की घटनाओं से प्रभावित होने से नहीं रोक सकता। विशेष रूप से राजस्थान जैसे गर्म और शुष्क क्षेत्रों में तापीय तनाव पशुओं के स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता पर गंभीर प्रभाव डालता है। गर्मी के कारण पशु थक जाते हैं, उनका भोजन कम होता है और उनकी प्रजनन क्षमता प्रभावित होती है, जिससे दूध उत्पादन और पोषण मूल्य दोनों घट जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि पशुपालक पशुओं के स्वास्थ्य, पोषण और प्रबंधन उपायों पर विशेष ध्यान दें। उचित देखभाल, संतुलित आहार और तापीय तनाव कम करने वाले उपाय अपनाकर दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों में सुधार किया जा सकता है, जिससे पशुपालकों को आर्थिक लाभ और पशुओं को स्वस्थ जीवन सुनिश्चित किया जा सके।

पशु स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता के मुख्य बिंदु

रोग और संक्रमण का प्रभाव : पशु स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता के बीच सबसे महत्वपूर्ण कारक रोग और संक्रमण हैं। दूधग्रंथियों की बीमारियाँ जैसे मैस्टाइटिस सीधे दूध की वसा, प्रोटीन और कुल पोषण मूल्य को प्रभावित करती हैं। संक्रमण के कारण दूध का उत्पादन कम हो जाता है और इसमें स्वच्छता संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अलावा, पाचन संबंधी रोग, बुखार और अन्य संक्रामक बीमारियाँ भी पशुओं की ऊर्जा और पोषण स्तर को घटाकर दूध की मात्रा और गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। रोगग्रस्त पशु का भोजन कम होता है, उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है और प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होती है। इस प्रकार, रोग और संक्रमण न केवल दूध की पोषण गुणवत्ता को घटाते हैं, बल्कि पशुपालकों के आर्थिक लाभ और पशुओं की दीर्घायु को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए पशुपालकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने पशुओं का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराएँ, समय पर टीकाकरण और आवश्यक उपचार सुनिश्चित करें, ताकि दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बनी रहें।

पोषण और आहार प्रबंधन: पोषण और आहार प्रबंधन दूध की मात्रा और गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। संतुलित और पोषक आहार पशुओं की ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन और खनिज आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिससे उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है और दूध का पोषण स्तर उच्च रहता है। उच्च गुणवत्ता वाला हरा चारा, फोज और खनिज-संयुक्त आहार दूध में वसा और प्रोटीन की मात्रा बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसके अलावा, समय पर और नियमित आहार वितरण, चराई का सही प्रबंधन और मौसम के अनुसार पोषण समायोजन दूध उत्पादन को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पोषण की कमी या असंतुलित आहार से पशु कमजोर हो जाते हैं, उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है और दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए पशुपालकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने पशुओं के लिए

संतुलित और पौष्टिक आहार सुनिश्चित करें, जिससे दूध उत्पादन में वृद्धि और गुणवत्ता में सुधार दोनों संभव हो सकें।

थर्मल और पर्यावरणीय तनाव: थर्मल और पर्यावरणीय तनाव दुधारु पशुओं के स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता पर गहरा प्रभाव डालता है। अत्यधिक गर्मी, आर्द्रता या ठंडे मौसम की चरम परिस्थितियों में पशुओं का शारीरिक संतुलन बिगड़ता है और उनकी ऊर्जा कम हो जाती है। विशेष रूप से गर्मियों में उच्च तापमान से पशु कम खाते हैं, उनके मेटाबॉलिज्म पर असर पड़ता है और दूध का उत्पादन घटता है। इसके अलावा, तापीय तनाव से प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है, जिससे पशु बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। राजस्थान जैसे गर्म और शुष्क क्षेत्रों में यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है, क्योंकि लंबे समय तक उच्च तापमान और शुष्क मौसम पशुओं पर लगातार दबाव डालते हैं। इस तरह के थर्मल और पर्यावरणीय तनाव के कारण दूध में वसा, प्रोटीन और अन्य पोषक तत्वों की मात्रा घट सकती है, जिससे दूध की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसलिए, पशुपालकों के लिए यह आवश्यक है कि वे पशु आवास में छाया, पंखे, स्प्रिंकलर और पर्याप्त पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें, ताकि थर्मल तनाव कम हो और दूध उत्पादन और गुणवत्ता दोनों सुरक्षित रहें।

प्रजनन और उम्र का प्रभाव: पशुओं की प्रजनन अवस्था और आयु भी दूध की मात्रा और गुणवत्ता को प्रभावित करती है। गर्भवती पशुओं में दूध उत्पादन में अस्थायी कमी आ सकती है, क्योंकि उनके शरीर का अधिकांश पोषण भ्रूण के विकास में जाता है। वहीं, वृद्ध या बुजुर्ग पशु प्राकृतिक रूप से कम दूध देते हैं और उनके दूध में पोषण तत्वों की मात्रा भी घट सकती है। स्वस्थ प्रजनन चक्र वाले युवा और उच्च उत्पादक पशु अधिक मात्रा में और पोषण मूल्य से भरपूर दूध प्रदान करते हैं। इसके अलावा, प्रजनन से जुड़ी समस्याएँ जैसे गर्भधारण में कठिनाई, असमय बछड़े का जन्म या प्रजनन चक्र में असंतुलन भी दूध की गुणवत्ता और मात्रा को प्रभावित करते हैं। इसलिए, पशुपालकों के लिए यह आवश्यक है कि वे पशुओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर ध्यान दें, समय पर टीकाकरण और चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित करें और प्रजनन के अनुकूल पोषण उपलब्ध कराएँ। इस तरह उचित प्रजनन और उम्र के अनुसार देखभाल से दूध उत्पादन स्थिर रहता है और उसकी गुणवत्ता भी बनी रहती है।

प्रबंधन और देखभाल के उपाय: पशुओं के स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए सही प्रबंधन और देखभाल अत्यंत आवश्यक है। इसके तहत सबसे पहले आवास का उचित प्रबंधन आता है। पशु आवास को स्वच्छ, हवादार और पर्याप्त छाया युक्त बनाना चाहिए ताकि गर्मी और थर्मल तनाव कम हो सके। गर्मियों में पंखे, स्प्रिंकलर और ठंडी जल आपूर्ति जैसी सुविधाएँ दूध उत्पादन में सहायक होती हैं। इसके साथ ही, पशुओं को संतुलित और पोषक आहार देना आवश्यक है, जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन और खनिज की पर्याप्त मात्रा हो। नियमित रूप से पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण, टीकाकरण और आवश्यक चिकित्सा देखभाल भी सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि रोग और संक्रमण के जोखिम को कम किया जा सके। चराई का समय मौसम और तापमान के अनुसार निर्धारित करना, साफ-सुथरे पानी की उपलब्धता और उच्च उत्पादक पशुओं के लिए विशेष पोषण देखभाल भी दूध की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करती है। इस तरह उचित प्रबंधन और देखभाल के उपाय अपनाकर पशुपालक अपने पशुओं को स्वस्थ रख सकते हैं और दूध उत्पादन और गुणवत्ता दोनों को स्थिर बनाए रख सकते हैं।

डॉ रीटा संघु, डॉ मुकुल सैन और डॉ राहुल सिंह पाल
डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर



ठण्ड व नमी के मौसम में होता है मुंहपका-खुरपका रोग

राजस्थान अपनी गाय, भैंस, भेड़, बकरी जैसी पशुधन संपदा के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। जहां पशुपालन एक प्रमुख आजीविका का स्रोत है, लेकिन इन सबके बीच मुंहपका-खुरपका रोग एक बड़ी समस्या बनी हुई है जो पशुओं के सेहत और किसानों की आमदनी दोनों को प्रभावित करती है।

मुंहपका-खुरपका रोग क्या है: यह एक अत्यंत संक्रामक विषाणुजनित रोग है जो कि पिकानीवायरस परिवार के एपथोवायरस से होता है यह वायरस सात अलग-अलग सीरोटाईप्स (A,O,C, SAT-1, SAT-2, SAT-3 Asia-1) में मौजूद होता है। भारत में मुख्य रूप से A,O तथा Asia-1 सीरोटाईप्स पाए जाते हैं। यह रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी जैसे खुर वाले पशुओं में पाया जाता है।

रोग के कारण:

- ❖ संक्रमित पशु के प्रत्यक्ष संपर्क में आने से स्वस्थ पशु में फैलता है।
- ❖ वायरस हवा के माध्यम से कुछ दूरी तक फैल सकता है, खासकर जब मौसम ठंडा और नम हो।
- ❖ दूषित चाय, पानी, बर्तन या पशुपालक के कपड़े और जूते वायरस का वाहक बन सकते हैं।
- ❖ पशुपालक या व्यापारी जो संक्रमित पशुओं के संपर्क में आते हैं।
- ❖ बीमार पशु की लार, दूध, मल-मूत्र के संपर्क से भी यह रोग फैल सकता है।

लक्षण:

- पशुओं के मुंह, जीभ तथा होठों पर फफोले/छालें और घाव बनते हैं, जिसके कारण पशु को चारा खाने में दिक्कत होती है और अत्यधिक लार निकलती है।
- पैरों के खुरों में छाले और घाव बनते हैं, जिसके कारण पशु लंगडाने लगता है और काम करने की क्षमता कम होती है।
- दूध उत्पादन में भारी कमी देखी जाती है।
- पशु को तेज बुखार हो सकता है जिससे वह सुस्त और कमजोर दिखता है।
- भूख कम लगने के कारण तथा खाने में कठिनाई के कारण पशु का वजन तेजी से घट सकता है।
- छोटे बछड़ों तथा मेमनों में मृत्यु का खतरा बढ़ सकता है।

रोग नियंत्रण का आधार: इस रोग को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका टीकाकरण है। राजस्थान में निष्क्रिय ट्राईवैलेंट टीका (A,O तथा Asia-1 सीरोटाईप्स के खिलाफ) का उपयोग किया जाता है, जिसमें पहला टीका 3-4 महीने की उम्र में लगाया जाना चाहिए तथा इसके बाद हर 6 महीने में बूस्टर टीके की आवश्यकता होती है। राजस्थान सरकार, राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत मुंहपका-खुरपका रोग के लिए मुफ्त टीकाकरण प्रदान करती है। टीका लगवाने के बाद पशु को 10-12 दिन आराम देना चाहिए। अगर एक भी पशु बिना टीका लगे रह जाता है तो पूरा पशु समूह खतरे में पड़ सकता है।

रोकथाम के उपाय:

- पशुशाला, बर्तन तथा उपकरणों को नियमित रूप से साफ करें और कीटाणुनाशक जैसे फिनाईल या लाइम पाउडर का उपयोग करें।
- नए खरीदे हुए पशुओं को कम से कम 14 दिन तक अलग रखें, उनकी स्वास्थ्य जांच करें तथा बिना टीकाकरण वाले पशुओं की खरीद से बचें।
- बीमार पशुओं के दूध का उपयोग करने से बचें।
- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा अनावश्यक आवागमन को रोकें। पशुशाला को बाड़बंदी करके सुरक्षित करें तथा जंगली पशुओं के संपर्क में आने से बचाएं।
- पशुओं को रोग से बचाव के लिए टीकाकरण करावें

डॉ. दीपिका धूड़िया

वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

वाजिद ने पशुपालन व्यवसाय से समाज में जमाया अपना रुतबा

चूरु जिले के गांव बीनासर के निवासी वाजिद खान पुत्र श्री मुमताज खान का पशुपालन से जीवन निर्वाह और आय का एक प्रमुख साधन रहा है। वाजिद खान खेती में आय कम होने के कारण पशुपालन पर ही आश्रित थे। पहले पशुपालन केवल घरेलू आवश्यकता के अनुसार ही रखते थे लेकिन परिवार की जिम्मेदारी के रहते इन्होंने अपने व्यवसाय को बढ़ाना शुरू किया तथा समय के साथ-साथ मांस, अंडे एवं दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए बकरी, भेड़ एवं मुर्गी पालन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया। वाजिद खान का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है उतनी कृषि व्यवसाय से नहीं होती है शुरुआत में इन्होंने 10 बकरी, 5 भेड़ एवं 15 मुर्गीयों से पशुपालन व्यवसाय प्रारम्भ किया था। वर्तमान में वाजिद खान के पास 70 बकरियां 35 भेड़ें, 160 मुर्गीयां 3 भैंस, 2 गाय एवं 1 बैल हैं। बकरीयों-भेड़ों के मेमनों, मुर्गीयों, अंडों एवं भैंस व गाय का दुध बाजार में बेचकर अच्छा-खासा मुनाफा अर्जित करते हैं, जिनसे वे प्रतिवर्ष लगभग 5 से 6 लाख की आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। इसके साथ-साथ वह नस्ल सुधार का काम भी कर रहे हैं। वाजिद खान समय-समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र रतनगढ़ (चूरु) द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भी भाग लेते हैं। पशुपालन प्रशिक्षणों के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, संतुलित आहार, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, मौसमी बीमारियों से बचाव एवं पशु बांझपन की समस्याओं के प्रबंधन की जानकारी प्राप्त करते रहते हैं। वाजिद खान अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं तकनीकी सहयोग का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र, रतनगढ़ (चूरु) के वैज्ञानिकों को देते हैं।



सम्पर्क: वाजिद खान

गांव- बीनासर, तहसील- चूरु (मो.नं.8690847705)



महिलाओं के बिना पशुपालन क्षेत्र की प्रगति असम्भव



पशुपालन ग्रामीण जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ग्रामीण भारत में अधिकांश पशुपालन का कार्य महिलाएं ही करती हैं, लेकिन उनका यह योगदान अक्सर अनदेखा रह जाता है। महिलाएं पशुओं की देखभाल, दुग्ध दुहना, चारा खिलाना, पानी पिलाना, सफाई करना और यहां तक कि बीमार पशुओं की देखभाल जैसे कार्यों में दिन-रात लगी रहती हैं। भारत के कुल दुग्ध उत्पादन में लगभग 70 प्रतिशत योगदान महिलाओं

का है, जो यह दर्शाता है कि वे इस क्षेत्र की रीढ़ हैं। महिलाएं न केवल पारंपरिक कार्यों तक सीमित हैं, बल्कि अब वे दुग्ध सहकारी समितियों से जुड़कर दूध संग्रहण, प्रसंस्करण और विपणन जैसे कार्यों में भी भागीदारी कर रही हैं। कई क्षेत्रों में महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से डेयरी व्यवसाय चला रही हैं, जिससे उन्हें आय का एक स्थायी स्रोत मिला है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाएं पशुओं की नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान और प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं में भी सक्रिय हो रही हैं। पशुपालन ने न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है, बल्कि उन्हें सामाजिक स्तर पर भी पहचान दिलाई है। आज वे घर की चारदीवारी से निकलकर फैंसले लेने, समूहों का नेतृत्व करने और स्वयं के व्यवसाय चलाने की क्षमता रखती हैं। महिलाओं की मेहनत और धैर्य के बिना पशुपालन क्षेत्र की प्रगति संभव नहीं है। वे परंपरागत ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों को भी अपनाने लगी हैं। सरकार और गैर-सरकारी संस्थाएं अब महिलाओं को पशुपालन संबंधी प्रशिक्षण, ऋण सहायता और विपणन की जानकारी देकर उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दे रही हैं। महिलाओं की भागीदारी के कारण पशुपालन में उत्पादकता और गुणवत्ता में भी सुधार देखा गया है। कई महिलाएं अब बकरी पालन, मुर्गी पालन, सूअर पालन जैसे विविध क्षेत्रों में भी रुचि ले रही हैं। इससे न केवल दुग्ध उत्पादन बढ़ा है बल्कि प्रोटीन युक्त आहार भी परिवारों को सुलभ हुआ है। पशुपालन के माध्यम से महिलाएं पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे रही हैं, जैसे गोबर गैस प्लांट या जैविक खाद का निर्माण। ये सभी पहलू ग्रामीण जीवन को स्थिरता और समृद्धि प्रदान कर रहे हैं। हालांकि उनके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। उनमें से प्रमुख हैं तकनीकी जानकारी की कमी, प्रशिक्षण की अनुपलब्धता, पशु चिकित्सा सेवाओं तक सीमित पहुँच और सामाजिक रुढ़ियों जो उन्हें निर्णय प्रक्रिया से वंचित रखती हैं। इसके बावजूद महिलाएं अपने अनुभव, मेहनत और समर्पण के बल पर इस क्षेत्र को आगे बढ़ा रही हैं। यदि उन्हें उचित प्रशिक्षण, संसाधन, और तकनीकी सहायता दी जाए तो वे पशुपालन क्षेत्र को और अधिक प्रभावशाली बना सकती हैं। अंततः कहा जा सकता है कि पशुपालन में महिलाओं का योगदान केवल पशुधन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण परिवारों की आजीविका, पोषण और सामाजिक सशक्तिकरण से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनका यह अमूल्य योगदान न केवल परिवार बल्कि देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि उनके कार्यों को मान्यता दी जाए और उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान किया जाए जिससे वे पशुपालन के क्षेत्र में और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभा सकें।



“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

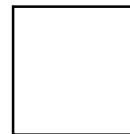
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया